श्री कामेश्वर सिंह (सहायक प्रोफेसर)
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम।
वर्ग – बी० ए० पार्ट – I (प्रतिष्ठा)
पत्र – प्रथम, यूनिट न० – 12
राजनीतिक सिद्धान्त – डॉ० पुखराज जैन
दिनांक – 22 – 07 – 2020

बहुलवाद के शेष भाग - - - -

कहा जाता है कि "बहुलवादी राज्य की आलोचना करते हैं, उसकी बेइज्जती करते हैं और उसको उच्च आसन से हटाकर निम्न श्रेणी में पहुँचाना चाहते हैं।" इस प्रकार बहुलवादी विचारकों ने सम्प्रभुता के असीमित, निरंकुश तथा अविभाज्य सिद्धान्त का प्रबल विरोध किया है और उसे सदा के लिए बाहर फेंकने का प्रयास किया है।

बहुलवाद के समर्थकों ने अपने समर्थन में सम्प्रभुता सम्बन्धी सिद्धान्तों पर निम्न रूप से आक्षेप किया है जो इस प्रकार है —

1. सार्वजनिक दृष्टिकोण के आधार पर :– वर्तमान समय में समाज की स्थिति इस प्रकार की है कि अकेला राज्य मनुष्य के विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता है। मनुष्य के विकास के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न समुदायों एवं राज्य के हस्तक्षेप से अलग होकर कार्य करने का अवसर मिले। क्योंकि वर्तमान परिपेक्ष में और कुछ अंशो में उससे भी अधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली है। क्योंकि राज्य द्वारा केवल राजनीतिक पहलू का ही कार्य किया जाता है। इसीलिए कोल के अनुसार "सामाजिक रूप से इन सभी समुदायों के कार्य राज्य की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ जाता है।"

Scanned with CamScanner

व्यवहार में तो इन संघों की शक्ति और अधिकार बराबर है। इतना ही नहीं कभी-कभी तो इनके आगे राज्य को झुकना भी पड़ता है। उदाहरण स्वरूप अमेरिका के रेलवे श्रमिक संघों ने अमेरिकन सरकार को विवश कर दिया कानून बनाया कि उनसे 8 घंटे से अधिक काम न लिया जा सके। अतः में हम कह सकते है कि बहुलवाद के अनुसार सम्प्रभुता सिर्फ राज्यों में ही निहित नहीं है बल्कि यह विभिन्न संघों में विभाजित है।

(2) ऐतिहासिक दृष्टिकोण के आधार पर :-

इतिहास इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करता है कि राज्य की सत्ता कभी नहीं रही। प्राचीन राज्य में धर्म का स्थान राजा की सत्ता से ऊपर था। अतः ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कहा जा सकता है कि सम्प्रभुता का सिद्धान्त राज्य के लिए आवश्यक नहीं है एवम् इस सिद्धान्त को अन्त करके प्राचीन एवं मध्यकाल की भाँति प्रभुत्व से मुक्त कर देना उचित है। प्रभुसत्ता के विचार का प्रादुर्भाव राष्ट्रीय राज्यों के विकास के साथ हुआ है यह राजाओं के 'दैवी अधिकार सिद्धान्त' से उत्पन्न होने वाले निरंकुश शासन का ही परिणाम है। क्रमशः.....